क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग शिविर में राष्ट्र निर्माण एवं मानव कल्याण के नियमों का सूत्रपात

क्रियायोग ध्यान से जागृत अवस्था में गहन निद्रा के अहंकाररहित अवस्था की अनुभूति – स्वामी श्री योगी सत्यम्

18 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । ''जब मनुष्य मायावी विचारों व भावनाओं के बोझ के असहनीय भार से बोझिल हो उठता है तो वह जाने अनजाने में सत्य से जुड जाता है । क्रियायोग ध्यान में साधक सजगतापूर्वक सत्य से जुडने का अभ्यास करता है और जो क्रियायोग ध्यान नहीं जानते हैं वे अनजाने में सत्य से जुडते ही गहरी नींद में सो जाते हैं । गहरी नींद में उम्र, जाति, प्रचलित धर्म–अधर्म, पाप–पण्य, लाभ–हॉनि, अच्छा–बुरा, क्षेत्र व राष्ट्र से संबंधित समस्त द्वन्दात्मक विचार व भावनाएँ लुप्त हो जाती हैं । क्रियायोग ध्यान गहरी नींद की अहंकार रहित स्थिति को जागृत अवस्था में बनाये रखने की अमूल्य विधि है जिसके अभ्यास से साधक प्रतिपल स्वास्थ्य, शांति, शक्ति, ज्ञान, जीवन, अमरता व निःस्वार्थ प्रेम से जुड जाता है । आज भारतवर्ष के सभी नागरिकों को इस स्थिति में रहने से राष्ट्र अपने पूर्ण वैभव के साथ विश्व में प्रकाशित हो उठेगा ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कुम्भ मेला क्षेत्र में सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त किया ।

कार्यक्रम में मोती लाल नेहरू मेडिकल कालेज के प्रिन्सिपल डा0 एस0पी0 सिंह जी, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरन्टो मेडिकल स्कूल की चिकित्सक डा0 जीना बिदेशी स्वामी तारामाता जी,

डा0 ज्ञानमाता जी और यू0एस0ए0 के अधिवक्ता तथा पूर्व मेयर (दो बार लगातार) डेविड लिंच जी के साथ–साथ भारत, कनॉडा, अमरीका, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, रूस, गयाना, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, ब्राजील आदि देशों से आये हुए साधकों ने भारी संख्या में भाग लिया । स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने राष्ट्रीय परिवर्तन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्र वे सारे लोग जो संविधान, कानून, शासन-प्रशासन के विभिन्न नियमों के निर्माण व उनके क्रियान्यवन के लिए कार्य कर रहे हैं उन सबका जीवन सत्य व अहिंसा के सिद्धान्त पर पूर्णतया आधारित होना चाहिए और ऐसा न होने से बनायी गयी सभी नियमावलियों से राष्ट्र में हिंसा, तनाव, गरीबी, शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ बढ़ने लगती हैं । यह आशा की जाती है कि आध्यात्मिक क्षेत्र में विद्यमान विचार सत्य व अहिंसा के सिद्धान्त पर आधारित है लेकिन व्यवहार में आध्यात्मिक क्षेत्र में संलग्न लोग अलग-अलग विचारों और सिद्धान्त को धर्म के रुप में प्रस्तुत करके मानव जाति के बीच में विभाजन की स्थायी दीवाल बना दिये हैं । इसी कारण से आज मानव जाति बँट करके कई खेमे में खड़ी हो गयी है । इन खेमों को देखने से लोगों में गलत धारणा बनती है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि अलग-अलग हैं। गलत आध्यात्मिक शिक्षा की वजह से ही आज मानव, जाति की गलत परम्परा के जाल में बुरी तरह फँस गया है। पहले जातियाँ भिन्न-भिन्न अर्जित ज्ञान के आधार पर उनके गुणों को व्यक्त करती थीं और सभी प्रकार के कर्मों का बडा महत्व था और कर्म ही पूजा का भाव पूरी तरह से विद्यमान था । आज जातियाँ जन्मना हो गयी हैं और कर्म न करना मनुष्य में गलत अहंकारिक राजसी परम्परा का दंभ प्रकट कर रहा है । प्रायः लोग समझते हैं कि सभी प्रकार का कार्य करना समय बर्बाद करना है । कुछ विशेष कार्यों को महत्व देकर लोग उन्हीं कर्मों को करने के प्रयत्न में लगे रहते हैं जिससे पूरे समाज में गरीबी और अशांति का वातावरण भर गया है । सभी प्रकार के कर्म को पूरे लगन से करने पर मनुष्य को सत्य व अहिंसा का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है । जातिगत अव्यवस्था को स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि जिस प्रकार इंजीनियर और डाक्टर की संतान बिना पढ़े इंजीनियर और डाक्टर नहीं हो सकता है उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति जन्म से जाति का वरण नहीं कर सकता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी कार्यक्रम के दौरान स्पष्ट किया कि राष्ट्र में व्याप्त सारी अव्यवस्थाओं को दूर करके सत्य व अहिंसा पर आधारित व्यवस्था बनाने के लिए उन सब लोगों को जो व्यवस्था बनाने में संलग्न होना चाहते हैं को ऐसी वैज्ञानिक प्रामाणिक शिक्षा की आवश्यकता है जो उन्हें सत्य व अहिंसा के मार्ग पर आसानी से ला सके । पूरे विश्व में व्याप्त विभिन्न जीवन शैलियों से संबंधित व्यवस्था व अनुशासन को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी प्रकार की शिक्षाओं में सत्य व अहिंसा की अनुभूति के लिए लाखों वर्ष का समय चाहिए । सत्य व अहिंसा अनुभूति के इस लम्बे समय को देखकर मानव जाति में निराशा और दुःख

भर गया है । इस निराशा और दुःख को हटाना सर्वश्रेष्ठ पुनीत कार्य है।

अपार हर्ष की बात यह है कि सत्य व अहिंसा को अल्प समय में अनुभव करने के लिए क्रियायोग विज्ञान एक पूर्ण शिक्षा के रूप में सरलता से सभी को उपलब्ध है । 1861 ई0 से आज तक लगभग सोलह महामानवों ने क्रियायोग ध्यान करके सिद्ध कर दिया कि मनुष्य को सबसे बड़ी डर जिसे मृत्यु कहते हैं, पर पूर्ण विजय मिल गयी है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करना ही अहिंसा की अनुभूति है । अहिंसा ही सत्य है और अहिंसा का अनुभव कर लेना ही सत्य की अनुभूति है ।

अभी तक यह पूरी तरह सिद्ध हो चुका है कि क्रियायोग ध्यान से मनुष्य पूरी तरह सत्य व अहिंसा में स्थापित हो जाता है और ऐसा होते ही वह सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियों से मुक्त होकर सम्पूर्ण मानव जाति, जीव जन्तु, वनस्पतियों, नदी, पहाड़, समुद्र, झील व तालाबों की वैसे ही सेवा करता है जैसे ईश्वर के रूप में जगत्-जननी दिव्य माँ सेवा करती है । अब यह पूरी तरह स्पष्ट है कि क्रियायोग के अभ्यास में जो लोग पूरी तरह निपुण हैं वे ही संविधान, न्यायपालिका, शासन व प्रशासन में व्याप्त सम्पूर्ण अव्यवस्थाओं को दूर करके उन्हें फिर से व्यवस्थित कर सकते हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6:00 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

- योगमाता